thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 47 1 से 7 जनवरी, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 पौ. मा.-11

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 22 दिसम्बर, 2014 को

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 88वाँ बलिदान दिवस समारोह

आर्य समाज दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली में सम्पन्न

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध आर्य समाज चलायेगा राष्ट्रव्यापी अभियान

– स्वामी आर्यवेश

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 88वें बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज, 'आर्य समाज दीवान हाल', चांदनी चौक, दिल्ली में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की पूर्वसंध्या पर 22 दिसम्बर, 2014 को स्वामी श्रद्धानन्द का 88वां बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. शिवकुमार शास्त्री ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान के द्वारा उपस्थित श्रोतागणों को कई बार भावुकतापूर्ण दृष्टांत सुनाकर भाव-विभोर कर दिया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए स्वामी जी की अनेक प्रेरणादायक घटनाएं सुनाई और वर्तमान समय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के समस्त कार्यों एवं कार्यक्रमों को प्रासंगिक बताया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्राचीन वैदिक आर्ष शिक्षा को आवासीय पद्धति पर संचालित करने की एक व्यवहारिक शिक्षा दी। उन्होंने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके विभिन्न कारणों से भटके हुए अपने ही भाईयों को पुन: वैदिक परिवेश में आने का रास्ता खोला। स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी के प्रबल पक्षधर, अछूतोद्धारक, नारी शिक्षा के प्रणेता एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान योद्धा थे। ऐसे महान संन्यासी एवं आर्य समाज के सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण कर आर्य समाज को वर्तमान में प्रचलित विभिन्न विसंगतियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी इतिहास पुरुष थे। हमें उनके क्रांतिकारी जीवन एवं कृतित्व से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में अनेकों मोड़ आये वे पौराणिकता से निकल कर आर्य समाज के सर्वमान्य नेता बने। उन्होंने राष्ट्रीय विचारधारा को नई ऊर्जा प्रदान की। उन्होंने 'सद्धर्म' पत्रिका के माध्यम से समाज को बदलने का कार्य किया। जात-पात के भेदभाव को दूर करने के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया था तथा हिन्दू, मुस्लिम एकता के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। त्यागी जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से महात्मा गांधी सहित बड़े-बड़े नेता प्रभावित थे। आर्य समाज को उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर निरन्तर संघर्ष करते रहना चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के तप, त्याग एवं बलिदान से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को पुन: राष्ट्रीय क्षितिज पर उभारने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने देश के आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वे स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश में महिला उत्पीड़न (कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, घरेलू हिंसा एवं विभिन्न प्रकार के व्यभिचार, अनाचार आदि), नशाखोरी (शराब, अफीम, सुल्फा, गांजा, हिरोईन आदि मादक पदार्थ), धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड जन-जागरण अभियान प्रारम्भ करें। स्वामी जी ने समस्त प्रान्तीय सभाओं, जिला सभाओं तथा स्थानीय आर्य समाजों एवं विभिन्न आर्य युवक संगठनों व आर्य शिक्षण संस्थाओं से अपील की कि वे उपरोक्त तीन मुद्दों पर युद्ध स्तर पर कार्य प्रारम्भ करें और पूरे देश में आर्य समाज की पहचान बनाकर दिखायें। सभा प्रधान जी ने कहा कि आज समय आ गया है कि प्रत्येक कार्यकर्ता को कमर कसकर कार्य करना होगा। जो लोग महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को पीछे धकेलकर वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं एवं अवैदिक विचारधारा को पोषित एवं पल्लवित कर रहे हैं वे देश के भविष्य के लिए एक चुनौती हैं। महर्षि ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर सभी धर्मों के पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध संघर्ष किया था और उसके बदले उनको जहर के प्याले पीने पड़े और विविध प्रकार के हमले तथा उन्हें अपमानित करने की कोशिश की गई। लेकिन वो अपने पथ से डिगे नहीं। आज हम सबको मिलकर समाज में फैली कुरीतियों तथा पाखण्ड के विरुद्ध समर्पित होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर सर्वश्री कृष्ण गोपाल दीवान, प्रधान आर्य समाज दीवान हाल, प्रसिद्ध समाजसेवी मामचन्द्र रेवाड़िया, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. ओम प्रकाश मान तथा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी का माल्यार्पण तथा शॉल भेंटकर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओम प्रकाश मान ने की तथा संयोजन सभामंत्री श्री बलजीत सिंह आदित्य ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री रामकुमार सिंह कार्यकारी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मधुर प्रकाश शास्त्री, अमित मान, आचार्य भद्रकाम वर्णी, पूर्व राजदूत विद्यासागर वर्मा, डॉ. अशोक गुलाटी-मंत्री आर्य समाज नोएडा, ऋषिपाल शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य आदि सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के अवसर पर

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक, अन्धविश्वास के विरुद्ध

पलवल से चण्डीगढ़ की ऐतिहासिक जन-चेतना यात्रा

दिनांक : 14 से 23 फरवरी, 2015 तक

सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं इच्छुक महानुभावों से यात्रा में सम्मिलित होने की अपील

आगामी महर्षि दयानन्द जन्मदिवस के अवसर पर दिनांक 14 फरवरी, 2015 से पलवल नगर से प्रारम्भ होकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध आर्य समाज की एक ऐतिहासिक जन-चेतना यात्रा हरियाणा के सभी 21 जिलों से होती हुई 23 फरवरी, 2015 को प्रदेश की राजधानी चण्डीगढ़ में सम्पन्न होगी। यात्रा के दौरान सैकड़ों स्थानों पर जन-सभाएं, नुक्कड़ सभाएं एवं यज्ञ आदि के द्वारा जन-जन में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी तथा पाखण्ड के विरुद्ध विशेष चेतना पैदा की जायेगी। इस यात्रा में आर्य समाज के संन्यासी, वानप्रस्थी, कर्मठ कार्यकर्ता, महिलाएं एवं समय देने के इच्छुक महानुभाव भाग लेंगे। यात्रा समाप्ति के पश्चात् हरियाणा के राज्यपाल एवं हरियाणा के मुख्यमंत्री को एक विज्ञापन भी दिया जायेगा और प्रदेश में उपरोक्त बुराईयों पर रोक लगाने के लिए आग्रह किया जायेगा। यात्रा की तैयारी युद्ध स्तर पर की जा रही है। समस्त आर्य महानुभावों एवं संन्यासियों, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों से प्रार्थना है कि वे यात्रा को सफल बनाने के लिए दिल खोलकर सहयोग करें। जो सज्जन अपना वाहन यात्रा के लिए उपलब्ध कराकर सहयोग देना चाहते हैं, अपना अमूल्य समय देकर 10 दिन तक यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं या आर्थिक सहयोग करके इस पवित्र अभियान को सम्बल प्रदान करना चाहते हैं, उन सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस राष्ट्र यज्ञ में आगे आकर अपना योगदान करें। उनका यह योगदान भविष्य में इतिहास का एक हिस्सा बनेगा। आप तो जानते ही हैं कि इस प्रकार के शुभ कार्यों की सफलता आप जैसे सहयोगियों पर ही निर्भर होती है।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष जनचेतना यात्रा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

नववर्ष का हर्ष कब, कैसे और क्यों?

- श्री उदयनाचार्य, निगमनीडम्, पिडिचेड़, गज्वेल, मेदक, तेलंगाना-502278

पहली जनवरी का आगमन होते ही छोटे-बड़े प्रबुद्ध, सामान्य स्त्री-पुरुष आदि सभी हर्ष-उल्लास के साथ नये वर्ष के स्वागत की तैयारी करते हैं। नये वर्ष की शुभकामनाओं को ज्ञापित करने हेतु चारों ओर बैनर, बोर्ड आदि लगाये जाते हैं। रंगोली, रंग-बिरंगी लाईट, फूल-माला आदियों से अलंकरण किये जाते हैं। रातभर जागकर पुराने वर्ष का अन्तिम क्षण बीतकर नये वर्ष का आदि क्षण उपस्थित होते ही आबालवृद्ध सभी जन नाच गान, आतिशबाजी, बैण्डबाजा आदि ध्वनियों से सभी दिशाओं को गुंजायमान करते हुए नये वर्ष का बड़ा स्वागत करते हैं और अपरिमित आनन्द का अनुभव करते हैं।

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी-1 नये वर्ष का आरम्भ है? क्या इसी दिन नये वर्ष का आरम्भ होता है? एक बार गम्भीरता से अपनी अन्तरात्मा में विचार करना। इस समय प्रचलित कालेन्द्र = कालान्तर (कैलेण्डर) ईसा से सम्बन्धित है, यह सर्वविदित है। क्या ईसा से पूर्व अपने भारतदेश का चरित्र, परम्परा, संस्कृति नहीं थी? यदि थी तो ईसा से पूर्व के लोग किस दिन नये वर्ष को मनाते रहे होंगे? यह विचार करना होगा, आत्ममंथन करना होगा। हम यहां केवल प्रमुख विषयों के साथ दिग्दर्शन करा रहे हैं। सुधी पाठकवृन्द स्वयं विचार कर निर्णय लें और तथ्य (सत्य) को सबके सामने प्रस्तुत करें।

यह जड़ जगत्, पशु-पक्षी, मनुष्यों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहे हैं कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है। पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवतसर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। अग्नि व दीपकों को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी। पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं। कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दिखती। ऐसे समय में वर्ष व दिन का आरम्भ मानना अज्ञान एवं अविवेकता है, विज्ञान के विरुद्ध है। एक सूर्योदय (ब्रह्ममुहूर्त) से दूसरे सूर्योदय के बीच के समय को ज्योतिष शास्त्र में सावन दिन कहते हैं। मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अतः भारतमाता के हे वीर सपूतों! जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो।

यूरोप देशों में पहले ओलम्पियन संवत्सर प्रचलित था। वही संवत्सर ईसा से 753 वर्ष पूर्व रोमनों का राज्य स्थापित होने के पश्चात् रोमनों के प्रथम राजा रोमलुस के काल में रोमन संवतसर के रूप में परिवर्तित हो गया। तब उस संवतसर के केवल दस मास (मार्च से दिसम्बर तक) और 304 दिन ही थे उन मासों के नाम रोमन देवताओं और महाराजाओं के नाम से रखे गये थे। जैसे कि 'मार्स' इस रोमन युद्ध देवता के नाम से 'मार्च' मास, अट्लस देवता की कुमारियाँ 'मलिका मई और मलिका जौन' के नामों से क्रमशः 'मई', 'जून' मासों के नाम रखे गये। रोमन सम्राट 'जूलियस सीजर' एवं उनके पौत्र 'आगस्टस सीजर' के नामों से 'जुलाई' और 'अगस्त' मास प्रचलित किये गये। इस प्रकार प्रथम मास मार्च से छठे मास अगस्त तक के मासों का नामकरण सम्पन्न हुआ। उनके पश्चात् के मास क्रम बोधक शब्दों से प्रसिद्ध किये गये। जैसे कि सप्तम (सातवां) मास का नाम सेप्टम्बर, अष्टम (आठवां) मास का नाम अक्टोबर, नवम (नौवां) मास का नाम नवम्बर, दशम (दसवां) मास का नाम दिसम्बर रखा गया। यहां यह ध्यातव्य है कि सेप्टम्बरआदि शब्द सप्तमादि संस्कृत शब्दों के विकृत रूप हैं। सप्तम अम्बर (=नौवां आकाश) से नवम्बर और दशम अम्बर से दिसम्बर (दशम्बर) शब्द बना। सप्ताम्बर आदि शब्द आकाशस्थ नक्षत्रादियों की विशेष अवस्थाओं के बोधक हैं।

ये मार्च आदि दस मास ही 53 वर्षों तक व्यवहृत होते रहे। ईसा से 700 वर्ष पूर्व रोमनों का द्वितीय राजा "नूमा पोम्पिलियस" ने 'जोनस' नामक रोमन देवता के नाम से जनवरी मास आरम्भ किया, साथ में फिब्रवरी मास को भी आरम्भ किया, जिसका अर्थ है 'प्रायश्चित्त मास'। पांचवां रोमन सम्राट 'एत्रुस्कान ताक्विनियूस् प्रिस्कियूस्' (ईसा पूर्व 616-579) ने रोमन रिपब्लिकन् कैलेण्डर मुद्रित किया था, जिसमें जनवरी को प्रथम स्थान दिया गया था। इन दो मासों को दसवें मास दिसम्बर के बाद जोड़ा जाता तो बुद्धिमत्ता का परिचायक होता। परन्तु इन्हें आदि में जोड़ने से सातवां मास सेप्टम्बर नौवाँ मास हो गया, वैसे ही आठवां मास ओक्टोबर दसवां, नौवां मास नवम्बर ग्यारहवां एवं दसवां मास दिसम्बर बारहवां मास हो गया। जिससे सेप्टम्बर (सप्तम अम्बर= सातवां आकाश) आदियों के अर्थ निरर्थक सिद्ध हुए। अंग्रेजी में 'मार्च' का अर्थ है - 'गमन-आगमन' अर्थात् पुराना संवत्सर व्यतीत होकर नया संवतसर आ गया है। यह अर्थ भी जनवरी, फरवरी मासों को आदि में जोड़ने से व्यर्थ हो गया। अज्ञानता एवं अविवेकता के लिए यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। साथ में यहां यह भी विचार करना होगा कि फरवरी मास में 28 या 29 ही दिन क्यों? काल गणना में यदि कहीं कम ज्यादा हो जाता है तो, न्यूनतम रह जाती है तो उसकी पूर्ति अन्त में की जानी चाहिए, फरवरी मास यदि अन्त में रहता तो संवत्सर भर की न्यूनता को पूर्ण करने के लिए 28 या 29 दिन रखे गये हैं, ऐसा समझ में आता और फरवरी का अर्थ (प्रायश्चित्त) भी सार्थक होता। पर संवत्सर के बीच में अर्थात् दूसरे मास में न्यूनता की पूर्ति करना कहां की बुद्धिमत्ता है? इससे स्पष्ट है कि जनवरी एवं फरवरी दोनों मास दिसम्बर के बाद ही जोड़ने योग्य हैं, न कि मार्च के आदि में।

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है। इससे ज्ञात होता है कि मार्च-25 से वर्ष को आरम्भ करने की रोमन परम्परा एवं भारतीय परम्परा में अत्यन्त समानता है। मार्च से संवत्सर को आरम्भ करना भारतीय संस्कृति का अनुकरण होता है। अतः अपने क्रैस्तव सम्प्रदाय को वैदिक संस्कृति से अलग करने के दुरुद्देश्य से रोमन सम्राट् नूमा पोम्पिलियस् ने जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ा है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई समुचित कारण नहीं है। उससे रोमन संवत्सर 304 दिन के स्थान पर (304+31+28=363) दिन में रूपान्तरित हो गया। इनमें कुछ मास 30 दिन, कुछ 31 दिन तथा फरवरी मास 28 या 29 दिन के रूप में विभक्त हैं। जूलियस् सीजर और आगस्टस् सीजर के नामों वाले जुलाई एवं अगस्त मासों को क्रमशः 31-31 दिन के रूप में विभक्त किये गये। इस प्रकार यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि संवतसर का आद्य दिन, मासों का विभाग, परिमाण, नाम एवं क्रम ये सब स्वार्थवश वा अन्य दुरुद्देश्य के कारण अपने मतोन्माद से समाज पर बलात् थोपे गये हैं।

रोमन कैलेण्डर के बारह महिनों के नाम व परिणाम इस प्रकार थे -

Januarius (31) Februarius (28-29) Martius (31) Aprilis (30) Maius (31) Junius (30) Quinctilis (31) Sextilis (30) September (30) October (31) November (30) December (31)

ईसा से 44 वर्ष पूर्व जूलियस् सीजर (Julius Caesar) के सममान में Quinctilis मास के नाम को Julius (July) के रूप में परिवर्तित किया गया। ईसा से आठ वर्ष पूर्व सम्राट् अगस्टस् सीजर ने स्वयं ही Sextilis मास के नाम को अपने नाम से अर्थात् Augustus (August) नाम से प्रसिद्ध कर दिया। पहले Sextilis मास में तीस ही दिन थे, पर अपने नाम वाला मास जूलियस् सीजर के नाम से प्रसिद्ध मास Julius (July) के समान रहना चाहिए, ऐसा विचार कर तीस दिन के बदले में August को एकत्तीस दिन का बना दिया। इस एक दिन के आधिक्य को फिब्रवरी मास में एक दिन घटाकर 29 दिन के बदले में 28 दिन कर दिया इस कैलेण्डर के कुछ दोषों को दूर कर 'पोप ग्रेगरी' ने एक विनूतन कैलेण्डर को प्रकाशित किया। यही कैलेण्डर सन् 1582 से कुछ प्रमुख देशों में अपनाया गया। यह ग्रेगारियन् कैलेण्डर किस-किस देश में कब-कब अपनाया गया था, इसका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है -

संवत्सर (ईस्वी सन्) देशों के नाम-1582 - फ्रांस, इटली, लक्सेम्बर्ग पुर्तगाल, स्पेन। 1583-1812 - स्विट्जलैंड। 1584 - जर्मन (रोमन कैथोलिक), बेल्जियम और नीदरलैंड के कुछ प्रान्तों में। 1587 - हांगरी। 1699-1700 डेन्मार्क, डच्, जर्मन प्रोटेस्टण्ट। 1776 जर्मनी। 1752 - ब्रिटेन, अमेरिका। 1753 - स्वेडेन। 1873, 1875 - जापान, मिस्र। 1912-1917 अल्बानिया, बुल्गारिया, चीन, एस्तोनिया, लातविया, लिथुआनिया, रोमानिया, तुर्की, युगोस्लाविया। 1918, 1923 सोवियत रूस, ग्रीस।

भूगोल और खगोल के विज्ञान से, प्राकृतिक घटनाओं से, सूर्य-चन्द्र-ग्रह नक्षत्रों की स्थितियों से ग्रेगारियन कैलेण्डर के मासों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दीखता। इसलिए जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ने पर भी जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में लोगों ने नहीं स्वीकारा। मार्च 25 को ही संवत्सरादि अर्थात् नये वर्ष के रूप में मानते हुए आये हैं। सन् 1582 से जनवरी-1 नये वर्ष के रूप में व्यवहार में आया, उससे पूर्व नहीं।

जनवरी-1 को नये वर्ष के रूप में मनाने की पद्धति को अंग्रेजियों ने भारत में भी सन् 1752 में आरम्भ करवाया। भारतीय परम्परा को नष्ट करने के लिए बहुत से षड्यन्त्र करने पर भी वित्तसंवत्सर (Financial year) और शिक्षा संवत्सर (Educational year) आज तक अप्रैल-1 से ही आरम्भ होते हैं। इन्हें बदल नहीं पाये। ये दोनों ही संवत्सर भारतीय नये संवत्सर के अनुकूल हैं, साथ में वैज्ञानिक और बुद्धिसंगत हैं। पर अप्रैल-1 का मूर्खदिवस (Foolish day) के रूप में प्रचलन कराया गया। इसका कारण यह है कि सन् 1582 में फ्रांस के दसवें राजा 'चार्ल्स' ने अपने देश में जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में घोषणा की, पर वहाँ की जनता राजाज्ञा को स्वीकार न कर अप्रैल-1 को ही नया संवत्सर मनाती रही। इससे क्रुद्ध चार्ल्स ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सभी को मूर्ख घोषित किया। उसके बाद धीरे-धीरे वहाँ की जनता को जनवरी-1 को ही संवत्सरादि के रूप में मानना पड़ा। इस सफलता को देखकर, पुनः भविष्य में कोई भी अप्रैल-1 को नया वर्ष न मनावें, इस उद्देश्य से चार्ल्स ने अप्रैल-1 को मूर्खदिवस के रूप में घोषणा करवाई। हम भारतीय इस सच्चाई को न जानते हुए जन्मान्धों के समान भेड़ चाल से उनका अनुकरण करते जा रहे हैं और बिना किसी राजाज्ञा के ही खुशी से, आनन्द से दूसरे को अप्रैल-फूल (मूर्ख) बनाते जा रहे हैं। ऐसा दृष्टान्त संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा। प्रत्येक मनुष्य व समाज अपने आपको बुद्धिमान, मेधावी तथा महान् मानता है। मूर्ख व हीन नहीं। एक दूसरे को परस्पर ज्ञानादि का आदान-प्रदान करना ही उत्तम समाज का लक्षण है। पर परस्पर मूर्ख कहना बुद्धिमानों का व्यवहार नहीं है। अतः इस प्रकार की बुद्धिहीनता के व्यवहारों को त्यागकर अप्रैल-1 के बदले में जनवरी-1 को Foolish day के रूप में मनाकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दें।

जनवरी-1 की आधी रात को शीत अपने चरम सीमा पर रहती है। सर्वत्र उसका ही प्रकोप दिखाई देता है। पौधे, वृक्ष, वनस्पति, लता-गुल्म आदि सभी रसहीन होकर मुरझा जाते हैं। फूलों का विकास कहीं भी नहीं दिखता। पशु-पक्षियों को तो शीत मृत्यु सदृश दिखाई देती है। ऐसे विशादकर, दुःखमय समय में नया वर्ष मनाना क्या उचित है? सुधी पाठक विचार करें।

दिन का प्रारम्भ आधी रात को नहीं, अपितु सूर्योदय से तीन घण्टे पूर्व (3 A. M.) होता है। उसी समय पशु-पक्षी आदि जागकर अपने-अपने मधुर ध्वनियों से सभी दिशाओं को मनोहर एवं श्रव्य बनाते हैं। वह दृश्य अवर्णनीय होता है। उसी समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। किसान भी उसी समय निद्रा को त्यागकर खेती के कार्यों में लग जाते हैं। उसी समय सम्पूर्ण संसार में सक्रियता, क्रियाशीलता दिखाई देती है। रात को मुरझाये हुए पत्ते और फूलों में भी उसी समय विकास आरम्भ होता है। प्राणियों के शरीरों में भी उसी समय एक विशिष्ट चैतन्य का संचार होता है। मनुष्यों के शरीरों में भी सक्रियता, रक्त का संचार, हृदय की गति बढ़ती है इसलिए हृदय के रोगियों को प्रायः इसी समय हृदयाघात होता है। हम सुनते आये हैं और आयुर्वेदादि शास्त्र भी कहते हैं कि सभी मनुष्यों को इसी ब्रह्ममुहूर्त में जागना चाहिए। क्योंकि इस दिव्य मुहूर्त में सोने वाले की आयु, शक्ति और बुद्धि क्षीण हो जाती है एवं आलसी पन बढ़ जाता है। इस प्रकार यह जड़ जगत्, पशु-पक्षी, मनुष्यों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहे हैं कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है। पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवतसर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। अग्नि व दीपकों को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी। पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं। कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दिखती। ऐसे समय में वर्ष व दिन का आरम्भ मानना अज्ञान एवं अविवेकता है, विज्ञान के विरुद्ध है। एक सूर्योदय (ब्रह्ममुहूर्त) से दूसरे सूर्योदय के बीच के समय को ज्योतिष शास्त्र में सावन दिन कहते हैं। मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अतः भारतमाता के हे वीर सपूतों! जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो। ●

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

कार्यपालिका

कार्यपालिका अर्थात् सरकार और प्रशासन की स्थिति भी बेहतर नहीं मानी जा सकती क्योंकि भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, लालफीताशाही, भाई-भतीजावाद, अनुशासनहीनता, आरक्षण नीति, यूनियनबाजी, ठेकेदारी प्रथा, गैस्ट कर्मचारियों की भर्ती, कर्मचारियों में व्याप्त आलस्य, प्रमाद, लापरवाही और मटरगश्ती, इंसैंटिव स्कीमस इतने परजीवियों की घुसपैठ इसमें हो चुकी हैं जो उसे भीतर ही भीतर चाट रहे हैं, खोखला और निष्प्रभावी बना रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व अखबारों में समाचार पढ़ा था कि दिल्ली के पुलिस स्टेशनों में एस. एच. ओ. को अमुक थाना चाहिए तो उसे कम से कम अमुक राशि (जो लाखों में थी) हर महीने ऊपर पहुँचानी होगी। यह राशि जुटाने में उसे पूरी स्वतन्त्रता मिलती थी कि शिकायती व आरोपी दोनों पक्षों से जो चाहे वसूले, रेहड़ी-खोमचे वालों से जो चाहे वसूले, पटरी पर सामान व सब्जी बेचने वालों से जो चाहे वसूले, सार्वजनिक स्थल पर खड़े होने वाले रिक्शा या ऑटो वालों से जो चाहे वसूले, अवैध पार्किंग व शराब विक्रेताओं से जो चाहे वसूले, जेबकतरों और चोरों से जो चाहे वसूले, वेश्यावृत्ति में संलग्न सभी पक्षों से जो चाहे वसूले, जमाखोरों व कालाबाजारी करने वालों से जो चाहे वसूले, जुआरियों, शराबियों व स्मैकियों से जो चाहे वसूले, पेशेवर अपराधियों और कबाड़ियों से जो चाहे वसूले, यहाँ तक कि जूती गांठने वाले मोची और भविष्य बतलाने वाले ज्योतिषी को भी न बख्शते हुए जो चाहे वसूले, जब कोई न मिले तो बिना अधिकार के भी ट्रक वाले, बस वाले, स्कूटर सवार को रोककर उगाही करने का निर्बाध अधिकार भी उसे प्राप्त था। जिस पुलिस विभाग पर कानून व्यवस्था बनाये रखने का अहम दायित्व है उस पुलिस विभाग की यह दशा होगी तो दायित्व को निभाने की दक्षता उसमें कहाँ से आयेगी? स्थानीय विधायकों, सांसदों, उच्चाधिकारियों का हस्तक्षेप तो पुलिस विभाग पर निरन्तर बना ही रहता है। विशेषत: सत्तारूढ़ पक्ष के विधायकों व सांसदों की अनदेखी तो कोई भी एस. एच. ओ. नहीं कर पाता। ऐसे में अपराधों पर नियंत्रण स्थापित करना लगभग असम्भव हो जाता है। जब तक किसी घटना को लेकर जनता हंगामा न करे, अखबारी सुर्खियों में वह न आये, सांसद-विधायक का दबाव न पड़े तब तक उस घटना को लेकर पुलिस निष्क्रिय और उदासीन बनी रहती है। साधारण आदमी के तो एफ.आई.आर. दर्ज कराने के लिए पैर भी पुलिस स्टेशन की ओर नहीं उठते। पुलिस आम आदमी की साथी न होकर पहुँच रखने वाले लोगों के हाथ की कठपुतली बन गई है। उसकी ईमानदारी, दक्षता और कर्त्तव्यपरायणता उन्हीं मामलों में सामने आती है जहाँ असहनीय दबाव पड़ता है। पुलिस की मानसिकता और कार्यशैली में सुधार लाने के लिए अनेक कमीशन बने लेकिन उनकी सिफारिशों पर जितना अमल होना चाहिए था, नहीं हुआ है।

प्रशासन में शायद ही कोई ऐसा विभाग हो जिस पर आम जनता संतुष्ट दिखाई देती है। बड़े-बड़े स्कैण्डलों में हर विभाग संलिप्त रहा है। यहाँ तक कि रक्षा और शिक्षा से जुड़े विभाग भी इससे नहीं बचे हैं। कैग की रिपोर्टस बतलाती हैं कि कितनी भारी अनियमितताएँ इन विभागों में है। कोई भी योजना ठीक समय पर शुरू या पूरी न होने पर उस पर करोड़ों रुपयों का अतिरिक्त व्यय हो जाता है। निविदाओं में इतने घपले होते हैं कि जिनका कोई ठिकाना नहीं होता। सरकारी विभागों की कार्य-संस्कृति इतनी लचर हो चुकी है कि विभागीय कर्मचारी जिस कार्य को बीस लाख में पूरा करते हैं उस काम को बाहरी ठेकेदार पन्द्रह लाख में कर देता है जिसमें उसे अधिकारियों की जेब गरम करने हेतु रिश्वत अलग से देनी पड़ती है। राजमार्गों के निर्माणमें इतनी धांधली है कि निर्माण का पूरा खर्चा निकालने के बाद भी प्राइवेट कम्पनियाँ वर्षों तक टोल-टैक्स पब्लिक से वसूलती रहती हैं। विद्युत सप्लाई का काम चाहे सरकार के पास हो अथवा प्राइवेट कम्पनी के पास बिल भरने वाली आम जनता को निर्ममता से लूटा जा रहा है। पहले दो महीने में बिल आता था अब महीने में आने लगा है जिससे मीटर रीडिंग व अन्य सर-चार्ज ग्राहक को दुगने देने पड़ रहे हैं। झुग्गी-झोपड़ियों में घरों-कारखानों में, गाँव व ट्यूब वैलों पर जो अवैध खपत बिजली की होती है और जिनके बिल न तैयार होते हैं, न भरे जाते हैं उनकी भरपाई भी बिल भरने वाली आम जनता से की जा रही है। एक सामान्य परिवार जो दो साल पहले ढाई हजार का बिल भाता था आज उसे पांच हजार भरने पड़ रहे हैं जबकि उसकी आमदनी में रत्ती भर ईजाफा नहीं होता। एक आम परिवार का आधा वेतन तो बिजली-पानी-हाऊस टैक्स व दूसरे गुप्त टैक्सों के रूप में ही निकल जाता है। रीयल एस्टेट का धंधा आज इसलिए ठंडा है, पिट रहा है क्योंकि ईमारती सामान लोहा, सीमेंट, ईंट, लकड़ी, रेत, बजरी, मजदूरी के भाव डेढ़-दो गुणा बढ़ गये हैं लेकिन आम आमदनी की कमाई जहां की तहां ठहरी हुई है। जो परिवार बेरोजगारी के शिकार हैं, जिनके पास अपने खेत व रोजगार नहीं हैं उनकी स्थिति तो कमर तोड़ मंहगाई के इस दौर में दयनीय हो गई है। यह स्थिति अराजकता बढ़ने के स्पष्ट संकेत देने लगी है। मध्यजीवी वर्ग तो पिस ही रहा है, गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली एक तिहाई जनता को भी सस्ता अनाज, चावल, चीनी उपलब्ध नहीं है, उसे भी बिचौलिये बीच में लूट ले जाते हैं। एक आम किसान इस कारण लुट-पिट रहा है, कि उसे अपनी फसल का लागत मूल्य तक नहीं मिलता, लाभकारी मूल्य कहाँ मिलेगा। गन्ना मिल उसके भुगतान को वर्षों तक रोके रखते हैं। जो टमाटर दिल्ली में चालीस रुपये किलो बिकता है, उसके दाम किसान को चार रुपये प्रति किलो भी नहीं मिलते। अन्नदाता किसान आज इसी कारण आत्महत्या करने पर मजबूर हैं लेकिन इसे लेकर किसी का दिल नहीं पसीजता। लूट-खसोट की यह समूची व्यवस्था उस कार्यपालिका की देन है जिसके अधिकारी और कर्मचारी रक्षक की नहीं भक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। जिस देश में चतुर्थ श्रेणी में भर्ती होने के लिए पांच से दस लाख तक की रिश्वत देनी पड़ती हो उस देश की कार्यपालिका ईमानदारी से काम करेगी, ईमानदारी से एक आम आदमी के हितों

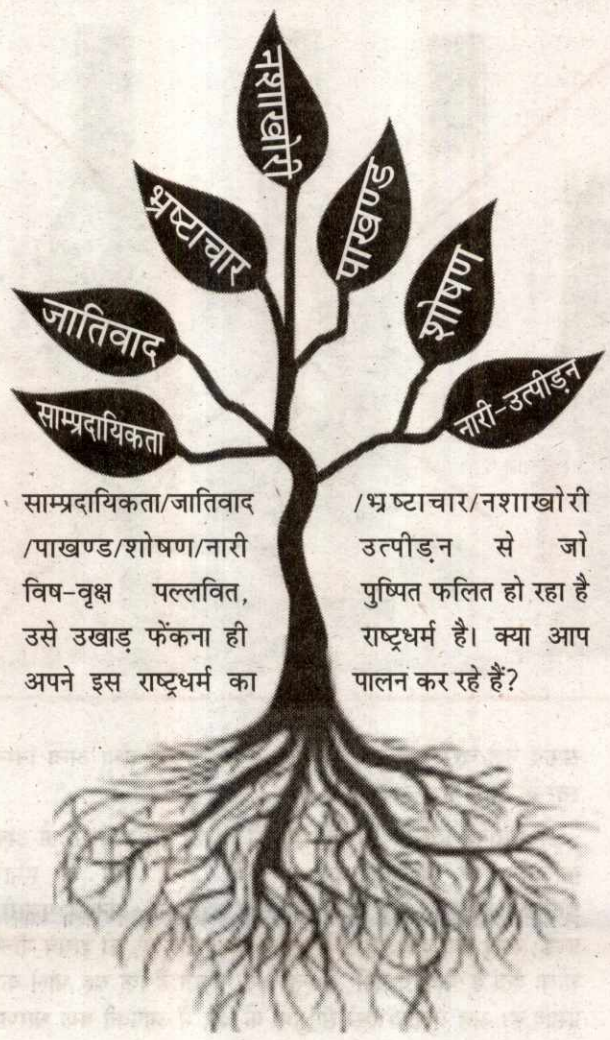

साम्प्रदायिकता/जातिवाद /पाखण्ड/शोषण/नारी उत्पीड़न /भ्रष्टाचार/नशाखोरी विष-वृक्ष पल्लवित, पुष्पित फलित हो रहा है उसे उखाड़ फेंकना ही राष्ट्रधर्म है। क्या आप अपने इस राष्ट्रधर्म का पालन कर रहे हैं?

की रक्षा करेगी, ईमानदारी से पावर लाईन और सप्लाई लाईन को चुस्त-दुरुस्त रखेगी यह सोचना ही अर्थहीन है।

न्यायपालिका

लोकतन्त्र के तीसरे स्तम्भ न्यायपालिका की स्थिति भी प्रशंसनीय नहीं मानी जा सकती। इसमें भी ऊपर से नीचे तक इतना भ्रष्टाचार, इतनी लेटलतीफी, इतनी खामिया हैं कि उस पर सीधी अंगुली उठाना अपराध माना जाता है, ब्रिटिश काल से ही उसने कानूनी स्तर पर अपना रक्षा कवच इतना मजबूत बना रखा है कि उसमें आसानी से सेंध नहीं लगाई जा सकती। भारत में विधायिका और कार्यपालिका पर आरोप मढ़ना, अंगुली उठाना जितना सरल है उतना न्यायपालिका पर छींटाकशी करना आसान नहीं है। उसकी हैसियत विधायिका व कार्यपालिका से ऊँची है और उसे अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। ट्रांसफर, कालाधन आदि मामलों में भी वह हस्तक्षेप कर सकती है। न्यायपालिका अवमानना के सुरक्षित कवच से सज्जित है। अमेरिका में जज व अदालत पर अंगुली उठ सकती है भारत में नहीं। दुनिया में कहीं भी जजों की नियुक्ति जज नहीं करते सिवाय भारत के। अब इसके लिए न्यायिक आयोग गठित हो रहा है तो कोहराम मच रहा है। इस न्याय व्यवस्था की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि बिना वकील किये मुकदमा लड़ा नहीं जा सकता, बिना गवाह के केस मजबूत नहीं बनता, बिना ठोस सबूत के अपराध सिद्ध नहीं हो पाता जिसकी वजह से अधिकांशत: अपराधी बिना सज़ा पाये बच निकलते हैं। हाई कोर्ट और सर्वोच्च न्यायालय की भाषा अंग्रेजी है जो पक्ष अंग्रेजी नहीं जानता वह वकीलों पर निर्भर रहता है अत: उसे पता ही नहीं चलता कि वह कहाँ फंस रहा है, कहाँ बच रहा है। इस समय लगभग तीन करोड़ मामले अदालतों में वर्षों से लम्बित पड़े हैं और हजारों पद अदालतों में वर्षों से रिक्त पड़े हैं। ऐसी स्थिति में न्याय मिलना कितना सरल है समझा जा सकता है। 20-20 साल तक लोग पेशियाँ भुगतते-भुगतते बूढ़े हो जाते हैं या मर जाते हैं लेकिन फैसला सामने नहीं आता। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी हत्याकाण्ड पर अंतिम फैसला बीस साल बाद जाकर हुआ था। सामान्य जन की कठिनाईयों को इसी से समझा जा सकता है। कार्यभार अधिक होने से जज के सामने गवाही तक नहीं हो पाती, उसमें भी साल भर लग जाता है। जिन लोगों को अदालतों का कटु अनुभव है वे इसे राहत नहीं आफत समझते हैं। व्यक्ति का जितना धन, समय श्रम और मानसिक शांति अदालतों में नष्ट होती है उतनी किसी और कार्य में नष्ट नहीं होती। कोर्ट से न्याय मिल भी जाये तो उसे अंतिम नहीं माना जा सकता क्योंकि फैसले में कुछ न कुछ कमी रह जाने से उच्च अदालत में अपील करने की गुंजायश बनी रहती है और प्रभावित पक्ष उसका लाभ उठाता है। जायदाद सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा तो कई-कई पीढ़ियों तक नहीं हो पाता। भारतीय अदालतों के बारे में कहावत है कि अदालत की एक-एक ईंट पैसा मांगती है। दूसरी कहावत है न्याय अंधा होता है। ये दोनों कहावतें अनेकार्थी हैं, अपने-अपने अनुभव के आधार पर लोग इनकी व्याख्या करते हैं जिससे अदालतों के कृष्ण व शुक्ल, दोनों पक्ष उभर कर सामने आते हैं। खुद वकील भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मामले का प्रस्तुतीकरण कितना ही अच्छा हो, गवाही कितनी ही ठोस हो, सबूत कितने ही सत्य हों, जिरह कितनी ही बेहतर हो फिर भी गारंटी नहीं रहती कि फैसला हक में होगा, सब कुछ जज के मूड और उसकी सोच पर निर्भर करता है। इस मूड व सोच को बिगाड़ने-संवारने के अनेक कारक अदालतों में मौजूद होते हैं - ऐसा कुछ मामलों में दिख भी जाता है और तभी केस एक अदालत से दूसरी अदालत में, एक प्रांत से दूसरे प्रांत में स्थानांतरित होते हैं, निचली से ऊँची कोर्ट में फैसले को लेकर अपील होती है जहाँ पराजित पक्ष जीत जाता है, फांसी की सज़ा पाये हुए बरी हो जाते हैं अथवा निचली कोर्ट से बरी हुए अपराधी उच्च कोर्ट में सलाखों के पीछे पहुँच जाते हैं। अदालतें भी भ्रष्टाचार से सर्वथा मुक्त नहीं हैं। उसका असली चेहरा कैसा है यह वरिष्ठ अधिवक्ता शांति भूषण (भारत के पूर्व कानून मंत्री) द्वारा आठ मुख्य न्यायाधीशों पर लगाये गये भ्रष्टाचार के आरोप से जाना जा सकता है। यौन उत्पीड़न के मामले में भी कुछ जजों पर आरोप लगे हैं। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश मार्कण्डेय काटजू की तल्ख टिप्पणियों से तो न्यायपालिका हिल सी उठी थी।

भारतीय अदालतों को लेकर बहुत कुछ लिखा व कहा जा चुका है। विविध स्तरों से स्थिति में सुधार लाने के दावे, आश्वासन, सिफारशें, परामर्श दिये जाते रहे हैं लेकिन स्थिति में क्रांतिकारी सुधार की सम्भावनाएँ क्षीण ही बनी हुई हैं। जब तक न्याय सस्ता नहीं होगा, त्वरित नहीं होगा, जनभाषा में न होगा, भ्रष्टाचार से मुक्त न होगा तब तक आमजन के लिए अदालतें हौवा बनीं रहेंगी, अभेद्य तिलस्म ही बनी रहेंगी। ब्रिटिश भारत की तुलना में आज़ाद भारत की स्थिति इस मामले में बदतर है कि अपराधों का ग्राफ बजाय नीचे गिरने के निरन्तर ऊँचा उठता रहा है। इसके अनेक कारण हैं अत: सीधा दोषारोपण अदालतों पर नहीं किया जा सकता लेकिन फिर भी इस स्थिति के बजने में अदालतों का योगदान भी एक अंश में है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। आम आदमी के लिए न्याय का अंतिम और विश्वसनीय मंदिर या दरबार अदालत ही होती है जहाँ वह जीवन भर की, खून-पसीने की गाढ़ी कमाई होम कर न्याय की याचना करता है। यहाँ भी यदि उसकी विश्वसनीयता पर आघात लगेगा तो अपना भग्न हृदय लेकर वह कहाँ उपस्थित होगा? देश की न्यायपालिका यदि लचर, बेदम, निष्प्रभावी, निस्तेज, भ्रष्ट दिखाई देगी तो देश को अराजकता के पथ पर ही धकेलेगी। ब्रिटिश भारत के अनेक लचर कानून आज भी कानून में शोभायमान हैं जो सिद्ध करते हैं कि स्व-संशोधन में हमारी न्यायपालिका कितनी गम्भीर व उत्साहित है? भारत का लोकमानस एक ऐसी न्यायपालिका चाहता है जो देश में रामराज्य के आदर्श को मूर्तिमंत कर सके और यह तभी सम्भव है जब जज की कुर्सियों पर बैठने वाले महाराज विक्रमादित्य की मानसिकता को शिरोधार्य कर अपने दायित्व का निर्वहन करना सीख जायेंगे।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

शराब : भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंकवाद की जननी है

– अमृतलाल मालवीय

आजकल देश-विदेश में भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंकवाद आदि सामाजिक एवं राजनैतिक बुराईयों के मूल में नशा/शराब ही प्रमुख कारण है, जिसे हम आज तक नकार रहे हैं/झुठला रहे हैं। शराब एक विलासिता का पेय है। आज आम लोगों की धारणा है कि लोग गम, चिन्ता से मुक्त होने के लिए शराब पीते हैं। ऊँची, मंहगी शराब निश्चित ही इन बड़े घरानों के लिए यह एक दैनिक स्फूर्तिवर्धक टानिक, इसमें अन्य लोगों का कोई लेना-देना नहीं, किन्तु जब इसका प्रचलन न केवल मध्यम वर्ग अपितु समाज के सबसे निर्धन गरीब वर्ग में हो जाता है, तब यह चिन्ता का विषय है क्योंकि इसकी अनेकों बुराइयों के अलावा इससे गरीब/मध्यम लोगों की पारिवारिक आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। अपनी कमाई का आधा भाग ये पीने में ही खर्च कर देते हैं तब घर के शेष सदस्यों बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, दवाई/रोटी, कपड़ा और मकान की क्या हालत होती है आप हम सब स्वयं ही देख रहे हैं। इस सामाजिक बुराई के लिए तो सर्वप्रथम शासन को ही उत्तरदायी ठहराया जाना उतिच होगा क्योंकि उसी के संरक्षण में शराब बनती है। विक्रय होती है/लाइसेंस दिये जाते हैं/शासन इससे राजस्व प्राप्त करता है। कहने को तो इसकी रोकथाम हेतु शराबबन्दी कानून बनाती है, पर क्या इससे शराब पीना/बनाना बन्द हो जाता है?कदापि नहीं, वरन इसका चोरी से प्रचलन बढ़ जाता है। दूसरा स्रोत इसका सरकारी चुनाव है। बिना शराब के आज तक देश में कोई भी चुनाव सम्पन्न नहीं हुआ। वोट पाने/वोट खरीदने का यही एकमात्र शस्त्र है जिसकी आजतक अनदेखी हो रही है। इसे रोकने में सरकारें नाकाम साबित हो रही हैं। तीसरा स्रोत शासन की कार्य प्रणाली का यह प्रमुख अंग है। इसके द्वारा सरकार में बैठे कर्मचारियों/अधिकारियों/मंत्रियों से बड़े से बड़ा काम कराना आसान हो जाता है। शराब पार्टी इसका प्रमुख माध्यम है। शराब के नशे में/शराब पीने के बाद उन अधिकारियों/कर्मचारियों से अपने पक्ष में आदेशों पर हस्ताक्षर कराना बिल्कुल आसान हो जाता है। जो काम रुपयों-पैसों से नहीं होगा वह काम यह शराब करा देती है। चौथा स्रोत सरकार का आबकारी विभाग है, जो सरकार को अधिक से अधिक राजस्व उपलब्ध कराने हेतु ठेकों की विधिवत नीलामी करना है। यह विभाग शराब नियंत्रण के लिए बना है किन्तु नियंत्रण के बजाय इससे शराब की दुकानों की निरन्तर वृद्धि हो रही है। नीलामी की राशि में बढ़ोत्तरी हो रही है। इस शराबखोरी की विभीषिका के कुछ उदाहरण/विवरण संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

1. शराब नशा से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। आंते जल जाती हैं, शराब पीने वालों की औसत उमर कम हो जाती है विश्व स्वास्थ्य संगठन की सर्वे रिपोर्ट से यह तथ्य साबित होता है।

2. मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों के परिवार शराब पीने से बर्बाद हो जाते हैं। लोग न तो अपने बच्चों को अच्छा पढ़ा सकते हैं और न ही लिखा सकते हैं। परिवार के अन्य सदस्य भी आर्थिक पीड़ा से त्रस्त होते हैं। वे गाली खाते हैं, कदाचरण के शिकार होते हैं।

3. महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार/बलात्कार, रेप आदि मामलों में अधिकतर शराबी व्यक्तियों को ही अपराधी पाया जाता है। ये लोग नशे की हालत में न केवल अपनी बहन, बेटियों, माँ को अपितु अबोध बालिकाओं तक को अपना शिकार बनाकर बलात्कार कर डालते हैं।

4. शराब से देश की संस्कृति नष्ट हो रही है। एक नशेड़ी से संस्कृति की क्या अपेक्षा की जा सकती है। वह तो एकदम नंगा-पशु बन जाता है। उसे जब अपनी माँ, बहन, बेटी की मर्यादा का ध्यान नहीं रहता तब उसे समाज देश की संस्कृति का कैसे ध्यान रहेगा?गाली, गलौज, मारपीट करना, चिल्लाना इन शराबियों की प्रमुख आदत होती है ऐसे में घर-परिवार का वातावरण कैसा रहता होगा, आप हम सब जानते हैं।

5. दुश्मनी, अनजाने में शराबखोरी अधिक कामयाब होती है। नशा कर मारपीट करना आसान हो जाता है।

6. कत्ल, हत्या आदि के मामलों में भी मूल कारण व्यक्ति का शराब के नशे में होना पाया जाता है, इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता।

7. शराब पीकर अपराध करने पर सम्भवत: कानून में भी रियायत मिलती है। अक्सर शराबियों को अपराध करने पर थाने में लाया जाता है किन्तु उन्हें छोड़ दिया जाता है। उन पर कानूनी दफा नहीं लगाई जाती, यह कहकर कि इस व्यक्ति ने शराब की हालत में यह अपराध किया है और मामला रफा-दफा कर दिया जाता है। इस प्रकार नशा कर अपराध करना आसान हो जाता है।

8. रेल, मोटर, यातायात, दुर्घटनाओं में भी सम्बन्धित कर्मचारियों का नशे की हालत में होना पाया जाता है। वाहनों की टक्कर में 90 प्रतिशत मामलों में चालकों का नशे में होना पाया जाता है।

9. शराब के बिना शादियों की पार्टियाँ और नृत्य सम्भव नहीं यहाँ तक कि अन्य समारोहों/धार्मिक समारोहों तक में भी अब शराब और डांस आम बात हो गई है।

10. इस नशे की लत में पीढ़ी बरबाद हो रही है। बच्चे अपने शराबी पिता का ही अनुकरण कर शराब पीने लगे हैं। उनके लिए बाजार से शराब खरीदकर लाकर देते हैं। इंजीनियरिंग और उच्च शिक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी अब शराब और नशे के शिकार हो रहे हैं। स्कूली बच्चे भी स्मैक, गांजा, भांग का सेवन करने लगे हैं। कुछ नशीले गुटके भी ये विद्यार्थी खाने लगे हैं। रेलगाड़ियों में झाड़ू लगाने वाले बच्चे तथा कबाड़ बीनने वाले बच्चे सफेद नशे/चरस की लत में पड़कर रेल सफाई तथा अन्य निम्न स्तर के कार्य कर रहे हैं।

उपरोक्त विवरण तो एक बानगी ही है। शराब, नशा तो अब कलियुग की पहचान बन गया है। इसने अब तो हमारे धार्मिक/आराध्य स्थलों तक को नहीं छोड़ा है। अनेकों पुजारी, पण्डे, साधु नशे की लत में लिप्त हैं। क्या साधुओं को शराब पीना शोभा देता है?कदापि नहीं, किन्तु वे तो कहते हैं कि यह भोले का प्रसाद है। अब बताइये ऐसे साधुओं के बारे में आपकी क्या धारणा होगी?निश्चित ही इस शराब, नशे की मूल में वही धन, सम्पत्ति, रुपया, पैसा ही होता है, जो अनाधिकृत रूप से प्राप्त किया जाता है, कमाया जाता है। भ्रष्टाचार और काले धन या टैक्स चोरी आदि की कमाई में भी शराब विद्यमान रहती है। विश्व में फैल रहे आतंकवाद के मूल में भी बड़े पैमाने पर शराब, नशीले पदार्थों का सेवन होता है तथा इनकी तस्करी से प्राप्त धन से ही आतंकवाद संचालित होता है। जीवित रहता है। आफिस का एक छोटा सा बाबू या चपरासी भी दिनभर अपनी एक पौआ शराब के लिये पैसें की जुगाड़ में लगा रहता हैं, हालांकि यह आम बात नहीं है फिर भी इसे उदाहरण ही मान लें तो पर्याप्त होगा। इस सत्य को भी कभी नहीं नकारा जा सकता है कि यह सब पश्चिमी सभ्यता की ही देन है। प्रत्येक व्यक्ति शराब पीकर अंग्रेज बनना चाहता है, मौज मस्ती में डूबना चाहता है। लोगों की यह गलत धारणा है कि अंग्रेज लोग सभी नियमित शराब का सेवन करते हैं। पर आपने कभी यह सोचा कि वे तो धनाढ्य हैं, सम्पन्न हैं, पर हम हमारे घर में तो खाने को दाना नहीं, बच्चे, पत्नी, माता-पिता सब भूखे हैं और हम इस स्थिति में भी शराब पीकर न केवल अपने आपको वरन पूरे परिवार को बरबाद कर रहे हैं। इस समय सुसंस्कृत समाज में शराब से अधिक घातक और विषैला और कोई जहर नहीं हो सकता है।

इस वर्तमान समय में मानव मानवता की खातिर परिवार समाज और देश को बचाना है तो सर्वप्रथम शासन तंत्र की ओर से इस दिशा में सक्षम, कारगर कार्यवाही की जाये, उपाय किये जावें। इसके लिए सर्वप्रथम तो देश में शराब बनाना बन्द किया जाये। सरकार का आबकारी विभाग अब केवल यही कार्य करे। देशी-विदेशी दोनों प्रकार के शराब कारखानें, गोरखधन्धे बन्द किये जावें। इसके लिये यदि देश में कोई सख्त कानून की आवयकता हो तो तत्काल बनाया जावे। अवैध शराब बनाने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही के तहत उम्र कैद तथा फांसी तक की सजा का प्रावधान हो। विदेशी शराब पर अधिकतम कस्टम ड्यूटी लगाकर इसके आयात को नियंत्रित किया जाये।

अस्तु इस वर्तमान समय में मानव मानवता की खातिर परिवार समाज और देश को बचाना है तो सर्वप्रथम शासन तंत्र की ओर से इस दिशा में सक्षम, कारगर कार्यवाही की जाये, उपाय किये जावें। इसके लिए सर्वप्रथम तो देश में शराब बनाना बन्द किया जाये। सरकार का आबकारी विभाग अब केवल यही कार्य करे। देशी-विदेशी दोनों प्रकार के शराब कारखानें, गोरखधन्धे बन्द किये जावें। इसके लिये यदि देश में कोई सख्त कानून की आवयकता हो तो तत्काल बनाया जावे। अवैध शराब बनाने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही के तहत उम्र कैद तथा फांसी तक की सजा का प्रावधान हो। विदेशी शराब पर अधिकतम कस्टम ड्यूटी लगाकर इसके आयात को नियंत्रित किया जाये। विदेशी शराब इतनी मंहगी हो कि आम आदमी उसे नहीं खरीद सके। अवैध देशी शराब बनाने वालें, पीने वालों को बिना जमानत गिरफ्तार कर कानूनी कार्यवाही की जाये। महुये का संग्रहण पूर्णत: गैर कानूनी किया जाये। शराबा के विकल्पों, ताड़ी या अन्य नशीले पेय पदार्थों तथा चरस, गांजा, भाँग आदि के व्यापार, उत्पादन तथा क्रय-विक्रय पूर्णत: प्रतिबन्धित, नियंत्रित किये जाये। इन सभी नशीले पदार्थों पेय पदार्थों को अनिवार्यत: आबकारी विभाग के तहत लाकर कार्यवाही की जाये। नशा किसी भी प्रकार का हो, वह मनुष्य समाज, देश तथा मानवता के लिए घातक, विनाशक ही होगा।

– इन्दौर, मध्य प्रदेश

वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् प्रधान शम्भू दयाल संन्यास आश्रम, गाजियाबाद का सार्वजनिक अभिनन्दन आगामी 15 मार्च, 2015 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में किया जायेगा। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से हजारों आर्यजन एवं स्वामी जी महाराज के शिष्य पधारकर उनका अभिनन्दन करेंगे। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायेगा जिसमें स्वामी जी महाराज के जीवनवृत्त, विभिन्न विद्वानों के संस्मरण, शुभकामना संदेश एवं चित्रावली प्रकाशित की जायेगी। समस्त विद्वानों, संन्यासियों एवं स्वामी जी के शुभचिन्तकों से निवेदन है कि वे अपने संक्षिप्त संस्मरण तथा स्वामी जी का कोई चित्र यदि उनके पास हो तो शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश अभिनन्दन समिति

thearyasamaj.org

Swami Agnivesh Joins Religious Leaders "United in Action against Violence in the Name of Religion"

VIENNA, 19 NOVEMBER 2014

Buddhist, Christian, Druze, Hindu, Jewish, Mandean, Sunni, Shiite, and Yezidi religious leaders from Iraq, Syria, the Middle East, Asia, and Europe gathered in Vienna in an unprecedented demonstration of multi-religious solidarity. Together they denounced with one voice all violence in the name of religion, and called on the international community to protect religious and cultural diversity in Iraq and Syria.

On behalf of their communities they jointly issued on 19 November the Vienna Declaration, "United against Violence in the Name of Religion", at the international conference organized by the KAICIID Dialogue Centre.

This is the first time religious leaders representing so many different religions from a crisis region, came together as one to denounce oppression, marginalization, persecution and killing of people in the name of religion.

Swami Agnivesh, a member of the KAICIID Board of Directors, was moved by the depth of solidarity among this diverse group of religious leaders, and addressed the gathering.

"Today I really feel very proud. This is the first time that we came together, and there was such intense, such profound sharing. I could hear the pain and the anguish in all your deliberations and your speeches. You are such great people. You have come from the areas of conflict, from among the people themselves, and you have shared your wisdom. We should feel challenged to bring about a change, a new understanding of religion itself. We have spoken about humanity, and the whole of humanity is one family."

In a plea on behalf of all of the religious leaders, the group affirmed that in the shadow of these difficult circumstances, the atrocities and deprivations suffered by the persecuted religious communities in Iraq and Syria, the leaders pledged to remain sincere in their convictions, true to their religious teachings and mindful of their humanitarian values.

The religious leaders acknowledged in unity that the current conflict in Iraq and Syria targets followers of every religion. They jointly rejected all violence in the name of religion, and attempts by groups like ISIS to claim legitimacy for their actions within the teachings of Islam. They also condemned the serious violation of human rights in Iraq and Syria; especially against Christian, Yazidi and other religious and ethnic groups.

In a statement of solidarity, the conference participants declared that "we gather together to listen to each other, and to think together about possibilities for cooperation to transform the crisis. It is through dialogue and the strengthening of our mutual values of citizenship, that the windows of hope and aspiration will be opened. We must tear down the barriers of fear, holding grudges and injustice, which divide people and eliminate their dreams and hopes of peace."

After two days of consultation with religious leaders, Swami Agnivesh urged the gathering in his closing statement to take immediate action, and called on religious leaders to go together to the scene of the crisis and make a united stand against the violence.

"We should feel challenged and we should say it loud and clear, so that the world knows we mean business. We mean change. Let us spare the time, and express real solidarity with the victims to save as many lives as possible. There is still time but time is running out."

Swami Agnivesh also recalled that the Metropolitans of Aleppo, the Syriac-Orthodox Archbishop Mar Gregorios Yohanna Ibrahim and the Greek-Orthodox Archbishop Boulos Yazigi, joined religious leaders at KAICIID's November 2012 inauguration and were kidnapped just a few months later in April 2013. "My heart is going out to them. I feel one with them. Today we don't know where they are. So I feel for those two bishops, and I feel for every one of those who are now being victimized. So let us do something, not just words, some action".

In their joint declaration, the religious leaders emphasized the right of all to be treated with dignity and humanity regardless of their religious tradition. Atrocities committed in the name of religion are crimes against humanity, and crimes against religion. The declaration also rejects and denounces the support or sponsorship of terrorism.

Together the religious leaders expressed their collective solidarity with all who are oppressed due to these events, especially those who have been uprooted and displaced from their homes. They called upon relevant political powers and the international community to spare no effort to help these people return to their homes.

Speaking after the meeting, Faisal Bin Muaammar, KAICIID Secretary General, the international organizer of the conference said, "The manipulation of religion in Iraq and Syria has horrific human consequences. Today we witnessed a reason for hope: the conviction and resolve of religious leaders from many different faiths, speaking with one voice, to say that ISIS and other

extremist groups do not act in the name of religion".

"The KAICIID Dialogue Centre is privileged to have brought these religious leaders together, and is committed to work with them, and with our partners in the international community, to help build peace for the people who suffer in this crisis, and to ensure that the world hears this call for action."

The participants at the KAICIID Conference "United against Violence in the Name of Religion" also recommended initiatives to promote social cohesion and peacebuilding in the region. The recommendations included the following seven activities:

1. Collect, study, acknowledge and promote success stories of interreligious and peace initiatives.
2. Introduce IRD education and training to students of religions including developing interreligious dialogue curricula.
3. Train preachers to disseminate the values of diversity and citizenship.
4. Establish a network of local religious leaders who believe in diversity and pluralism.
5. Provide a social media platform to increase important voices (for example the 126 Muslim scholars who denounced ISIS in an open letter on 24 September 2014)
6. Provide a training for a large number of youth, and empower them on social media.
7. Form a regional follow up committee to enact the recommendations

ABOUT THE CONFERENCE

Many religious leaders took part in two days of intensive discussion and planning. Among the prominent attendees were the Grand Muftis of Egypt (Sheikh Shawqi Ibrahim Alam), Jordan (Sheikh Abdul al Karim Al Khasawneh) and Lebanon (Sheikh Abd Al Latif Derian); the Mufti of Tripoli and North Lebanon, Malek Al Shaar; Patriarch Gregory III Laham, Patriarch of Antioch and All the East and Alexandria and Jerusalem; Patriarch Ignatius Youssef Younan of Antioch and All the East for the Syriac Catholic Church; Patriarch Louis Raphael I Sako, the Chaldean Catholic Patriarch of Babylon and the Head of the Chaldean Catholic Church; Anba Marcos Bishop of Shobra El Khema, representative of His Holiness Pope Tawadoros II, Pope of the Alexandria and Patriarch of the See of St. Mark, Head of the Coptic Orthodox Church of Egypt; and Metropolitan of Germany Isaac Barakat, representing Patriarch Yohanna X (Yazigi) the Greek Orthodox Patriarch of Antioch and All the East.

Also present at the event were high level representatives from the Armenian Orthodox Church; the Council of Senior Scholars from Saudi Arabia; the Mouwahiddoun Druze Community in Lebanon; the Evangelical Community of Lebanon; the Iraqi Muslim Association; the Maronite Patriarchate of Antioch and all the East, Alexandria and Jerusalem; the Mandaean Community in Iraq; the Melkite Greek Catholic Church, the Middle East Council of Churches, the Protestant Community of Egypt, and among many others.

All nine members of the Board of Directors of KAICIID were present at the conference, including: Swami Agnivesh, Dr. Hamad Al-Majed, Reverend Father Miguel Ayuso, His Eminence Metropolitan Emmanuel, Reverend Dr. Toby Howarth, Dr. Seyyed Ataollah Mohajerani, Rev. Kosho Niwano, Chief Rabbi David Rosen, and Dr. Mohammad Sammak.

Among the organizations represented at the International Conference were the Office of the UN's Special Adviser on the Prevention of Genocide, UNDP Iraq, UNDPA, the European Commission, the Adyan Foundation, the al-Khoei Foundation, the Arab Group for Muslim-Christian Dialogue, the Forum for Promoting Peace in Muslim Societies, the Iraqi Institute for Human Rights, the Iraqi Interfaith Council, and the Pontifical Council for Interreligious Dialogue.

ABOUT KAICIID

The KAICIID Dialogue Centre (King Abdullah Bin Abdulaziz International Centre for Interreligious and Intercultural Dialogue) was founded to enable, empower and encourage dialogue among followers of different religions and cultures around the world. Located in Vienna, the Centre is an independent international organisation, free of political or economic influence.

The Founding States of the Centre (Kingdom of Saudi Arabia, Republic of Austria and Kingdom of Spain) constitute the "Council of Parties" responsible for overseeing the work of the Centre; the Holy See is the Centre's Founding Observer. An overview of the Centre's areas of work is available here.

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा

दवाएँ बीमारी दूर करने की जगह नई बीमारी पैदा कर रहीं हैं

नई दिल्ली । देशी व विदेशी दवा कम्पनियाँ जो दवा बना रही हैं और डॉक्टर जिन्हें लिख रहे हैं, वे हमें चंगा करने के स्थान पर और बीमार कर रही हैं। कई बार तो जान जाने तक की नौबत ला देती हैं दवाएँ। भारत जैसे देश में जहाँ डॉक्टर की फीस भरना हर किसी के बस की बात नहीं है, सेल्फ मेडिकेशन एक आदत बनती जा रही है। लोग कुछ चुनिंदा दवाएँ खुद खरीद कर खा रहे हैं। यहाँ कुछ दवाओं और उनके घातक साइड इफेक्ट्स के बारे में बताया जा रहा है।

कब्ज : आये दिन कब्ज की शिकायत को लेकर विभिन्न दवा प्रणालियों के डॉक्टरों के यहाँ पीड़ितों की भीड़ देखी जा रही है। पहली बार के बाद भी समस्या के बनी रहने पर वे डॉक्टर के पास न जाकर डॉक्टर की बताई दवा या किसी दवा कम्पनी द्वारा विज्ञापित कब्जहारी दवा खुद खरीदकर खा रहे हैं। इनकी वजह से समस्या समाप्त होने की बजाय कुछ और बढ़ ही रही हैं या कुछ नई समस्या पैदा कर रही हैं।

कब्ज के लिए लूजी सिरप, डल्कोलैक्स, बाईसोलैक्स आदि दवाएँ हैं। सर्जरी से पहले पेट साफ करने के लिए भी दस्तावर (लैक्जेटिव) दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है।

इन दवाओं के साइडइफेक्ट हैं - डिहाईड्रेशन, पेट फूलना, पेट में दर्द, दस्त आदि।

दस्तावर दवाओं के लम्बे इस्तेमाल में लैक्जेटिव कोलाइटिस, किडनी में पथरी, दिल तथा मांसपेशियों की समस्या हो सकती है।

इन दुष्प्रभावकारी स्थितियों से बचने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए, साग-सब्जियों एवं फलों का सेवन करना चाहिए, जैसे सेव, अमरूद, गाजर, पालक आदि। मैदा या मैदे से बने खाद्य पदार्थों का खाना छोड़ देना चाहिए। मुनक्के का सेवन तो अत्यन्त लाभकारी है। इसके अलावा बेल का शर्बत और ईसबगोल की भूसी बिना किसी दुष्प्रभाव की देशी चीजें हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण हैं - सबेरे शाम तीन चार किलोमीटर टहलने का सिलसिला। इससे आंतों की क्रमाकुंचन (पेरीसटैल्सिस) क्रिया उत्प्रेरित होती है।

एंटीबायोटिक्स : एमॉक्सिलिन, सीप्रोफ्लॉक्सासिन, एम्पिलीसिन आदि एंटीबायोटिक्स दवाएँ आम तौर पर बैक्टीरिया, फंगी और दूसरे परजीवियों को मारने के लिए दी जाती हैं।

कुछ एंटीबायोटिक्स से डायरिया, त्वचा संक्रमण, कई तरह की एलर्जी होती है।

अगर लगातार इनका इस्तेमाल किया जाये तो शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। एंटीबायोटिक्स हमारे शरीर में मौजूद कई तरह के 'दोस्त बैक्टीरिया' को भी मार डालते हैं। अधिक प्रयोग से लिवर और किडनी खराब होने का खतरा रहता है। गर्भस्थ शिशुओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लगातार खाने से इनकी लत पड़ती है।

कफ सिरप : बेनेड्रिल, कोरेक्स, फिसेडिल सिरप आदि का छाती में जकड़न, बलगमी खांसी, सर्दी गले की खराश, सूखी खांसी में सेवन किया जाता है। मतली, तंद्रा भंग, याददाश्त कम होना, अवसाद, डर के दौरे पड़ना आदि इसके साइड इफेक्ट हैं। कफ सिरप का लंबे समय तक इस्तेमाल से ध्यान केन्द्रित करने में बाधा, शरीर में थर्राहट, थाइरॉएड समस्या, सक्रियता में कमी, दौरे पड़ना, उच्च रक्तचाप और अनियमित दिल की धड़कन की समस्या आती है। बिना डॉक्टर की सलाह के कफ सिरप न लें। खांसी से छुटकारा दिलाने के ढेरों देसी नुस्खे हैं। गरारा करें। अदरक की चाय लें। बेहतर हो कि किसी निकटवर्ती प्राकृतिक चिकित्सालय से सम्पर्क करें।

दर्दनाशक : आईबीप्रूफेन, एस्प्रीन, पैरासीटामॉल आदि दवाएँ सिर, कमर और घुटनों में दर्द में दी जाती हैं जिनका साइड इफेक्ट है मतली, वमन, डायरिया और पेट में दर्द।

इनके अधिक इस्तेमाल के नतीजे हाई ब्लड प्रेशर, किडनी डैमेज, स्ट्रोक और सिर दर्द। पेन किलर्स का इस्तेमाल वैसे भी कम करना चाहिए। लगातार खाने से इनकी लत पड़ जाती है।

भोजन के प्रकार व्यक्तित्व के सूचक

वाशिंगटन : किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व से उसके भोजन की पसंद और नापसंदगी का पता चलता है। एक नये शोध के मुताबिक, यदि आप सादा खाना पसंद करते हैं या फिर तीखा और चटपटा खाना पसंद करते हैं तो आपका व्यक्तित्व भी उसी के अनुरूप होगा।

'पेनसिलवेनिया यूनिवर्सिटी' द्वारा किये गये इस अध्ययन ने मनुष्य के व्यक्तित्व और उनके चटपटे भोजन के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की गई है। 'नाडिया बाइनर्स' ने धूम्रपान नहीं करने वाले 184 प्रतिभागियों पर यह अध्ययन किया। प्रतिभागियों की उम्र 18 से 45 साल के बीच थी। प्रतिभागी ऐसी किसी भी बाध्यता से भी रहित थे जिसके कारण उन्हें अपने जिह्वा स्वाद पर नियंत्रण करना पड़े। इनमें ज्यादातर गोरे रंग वाले और इनमें भी पुरुषों से ज्यादा महिलाओं की संख्या थी।

इन सभी पर 'आरनेट इन्वेंटरी ऑफ सेंसेशन सीकिंग' (एआईएसएस) नाम का परीक्षण किया गया था जो कि व्यक्तित्व की विशिष्टता और रोमांच की चाहत को रेखांकित करता है। इसे नया और तीव्र इच्छा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समूह में मौजूद जिन लोगों ने 'एआईएसएस' में ज्यादा अंक हासिल किये थे वे जोखिम उठाने और नये अनुभवों के लिए तत्पर रहते थे जबकि जिन्होंने कम अंक हासिल किये थे वे चीजों के प्रति कम संवेदनशील थे।

हाई हील पहनना आस्टियोआर्थराइटिस को दावत

नई दिल्ली : हाई हील पहनने से पांव के जोड़ों पर प्रतिकूल असर पड़ता है। हाईहील के कारण बीमारी 'आस्टियोआर्थराइटिस' के पहले चरण की शुरुआत भी हो सकती है। शोधकर्ताओं के अनुसार हाईहील पहनने से टखने को संतुलन बनाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में टखने में चोट लगने, साथ ही गिरने की आशंका भी बढ़ जाती है। शोधकर्ताओं के अनुसार हाईहील पहनने के दौरान गिरने पर कभी-कभी फ्रैक्चर तक हो सकता है।

हाई हील पहनने से शरीर का वजन आगे की ओर पड़ता है। इससे 'हिप्स' और रीढ़ की हड्डी 'आउट ऑफ एलाइनमेंट' हो जाते हैं।

दबाव : हाईहील पहनने पर टांगे लंबी दिखती हैं, लेकिन हील की ऊँचाई बढ़ने के साथ दबाव बढ़ने का स्तर भी बढ़ता जाता है।

पांव के पंजे पर खराब असर : ऊँची हील और पांव की अंगुलियाँ रखने की जगह छोटी होने से पांव के पंजे पर खराब असर पड़ता है। इससे तीसरी और चौथी अंगुली की नस के आसपास के टिशू मोटे होने शुरू हो जाते हैं। टिशू मोटे होने से दर्द होता है और पांव के आगे का हिस्सा सुन्न सा हो जाता है।

घुटना : ऊँची हील पहनने से घुटने पर दबाव बढ़ता है। एक शोध के अनुसार ऊँची हील पहनने की स्थिति में घुटने पर दबाव 26 फीसद अधिक बढ़ जाता है। पांव पर दबाव पड़ने के कारण गोखरू बन जाते हैं। जोड़ों पर गोखरू बनने की स्थिति में दर्द अधिक होता है।

पिंडली : पिंडली की मांसपेशियाँ ऊँची हील से तालमेल बिठाती हैं। इसलिए ये मांसपेशियाँ छोटी हो जाती हैं और इनमें कसावट आ जाती है।

वजन घटाना है तो रात में लाइट बंद कर दें

वाशिंगटन : यह सभी लोग जानते हैं कि जंक फूड खाने या व्यायाम नहीं करने से मोटापा बढ़ता है। लेकिन, एक नये शोध में कहा गया है कि रात को सोते वक्त ज्यादा रोशनी होने से भी वजन बढ़ता है। ओहियों स्टेट यूनिवर्सिटी में यह अध्ययन चूहों पर किया गया। करीब आठ हफ्तों तक रात के वक्त चूहों को रोशनी में रखने से उनका वजन बढ़ गया, जबकि उन्हें न तो ज्यादा खाने को दिया गया और न ही शारीरिक गतिविधि में कमी की गई। वहीं अंधेरे में रखे गये चूहों का वजन उतना नहीं बढ़ा। प्रोसिडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ सांइस के ऑनलाइन अंक में अध्ययन का परिणाम प्रकाशित किया जायेगा।

पिज्जा बर्गर से महिलाओं में बढ़ता है एनीमिया का खतरा : पिज्जा और बर्गर जैसे फास्ट फूड का अधिक सेवन करने वाली महिलाओं को एनीमिया का खतरा अधिक होता है। नेशनल इंटीग्रेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा) की संगोष्ठी में डॉक्टरों ने यह बात कही। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. समीर कौशल ने कहा कि फास्ट फूड के सेवन से शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी होती है जिससे एनीमिया का खतरा बढ़ता है। हीमोग्लोबिन की कमी पौष्टिक आहार, खासकर आयरन का कम सेवन और ब्लीडिंग के कारण होता है। डॉ. कौशल ने कहा कि अपनी व्यस्त दिनचर्या के कारण महिलाओं में इसका खतरा अधिक होता है।

।। ओ३म् ।।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी सम्वत् 2071–72 तदनुसार सन् 2015 ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	माघ बदी-9	2071	14-01-2015	बुधवार
2.	वसन्त पंचमी	माघ सुदी-5	2071	24-01-2015	शनिवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2071	12-02-2015	गुरुवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2071	14-02-2015	शनिवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2071	17-02-2015	मंगलवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2071	21-02-2015	शनिवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2071	05-03-2015	गुरुवार
		चैत्र बदी-1		06-03-2015	शुक्रवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2072	21-03-2015	शनिवार
9.	रामनवमी	चैत्र सुदी-8	2072	28-03-2015	शनिवार
10.	वैशाखी	वैशाख बदी-9	2072	13-04-2015	सोमवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2072	03-08-2015	सोमवार
12.	वेद प्रचार सप्ताह — श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2072	29-08-2015	शनिवार
13.	वेद प्रचार सप्ताह — श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-7	2072	05-09-2015	शनिवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-9	2072	22-10-2015	गुरुवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-11	2072	24-10-2015	शनिवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2072	11-11-2015	बुधवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	मार्ग सुदी-13	2072	23-12-2015	बुधवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं।

2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,

दूरभाष : 23274771, 23260985

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं 62वां वार्षिकोत्सव

दिनांक 13, 14 व 15 फरवरी, 2015

(शुक्रवार से रविवार)

आयोजक : आर्य समाज बगहां, मीरजापुर

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज बगहां द्वारा आयोजित यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं 62वां वार्षिकोत्सव ग्राम के दक्षिण पुल के पास दिनांक 13 से 15 फरवरी, 2015 (शुक्रवार से रविवार) को किया गया है। जिसमें आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान व भजनोपदेशक श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र., गुरुकुल पूठ (गाजियाबाद), आचार्य विश्वव्रत जी शास्त्री (लखनऊ), श्रीमती धर्मरक्षिता आर्या (बिहार), श्री जीवन सिंह (रजौली), श्री महेश आर्य, चौकियाँ, श्री अमित शास्त्री आदि पधार रहे हैं। इस बृहद वैदिक महोत्सव का उद्घाटन स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी करेंगे।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ऐसे पवित्र कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति देकर तन, मन व धन से सहयोग प्रदान कर लाभ उठावें।

- बेचन सिंह, प्रधान, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र.

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

विशाल महिला सशक्तिकरण एवं बेटी बचाओ सम्मेलन
11 जनवरी, 2015 को इनविटेशन गार्डन हिसार रोड, रोहतक (हरियाणा) में

कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के विरुद्ध जन-जन में चेतना पैदा करने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान में विशाल महिला सशक्तिकरण एवं बेटी बचाओ सम्मेलन का भव्य आयोजन 11 जनवरी, 2015 को इनविटेशन गार्डन, हिसार रोड, रोहतक (हरियाण) में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा की समाज कल्याण मंत्री श्रीमती कविता जैन एवं अति विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मनीष ग्रोवर विधायक रोहतक शहर तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रतिभा सुमन प्रदेशाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा, हरियाणा एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री प्रदीप जैन आदि सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम में उन दम्पत्तियों को भी सम्मानित किया जायेगा जिनके केवल पुत्रियाँ हैं पुत्र नहीं हैं। साथ ही बेटी बचाओ अभियान की कुछ कर्मठ कार्यकर्त्रियों को भी सम्मानित किया जायेगा, उन्हें प्रशस्ति पत्र भी भेंट किये जायेंगे। सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

निवेदक

बहन पूनम आर्या	बहन प्रवेश आर्या	आचार्य सन्तराम	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य
अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान	महामंत्री, बेटी बचाओ अभियान एवं संयोजक सम्मेलन	स्वागताध्यक्ष	अध्यक्ष, सार्व. आ. यु. प. हरियाणा

बेटी बचाओ अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

सम्पर्क :- 09416630916, 09354840454

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में वेद वितरण समारोह सम्पन्न
वेद की शिक्षाओं से ही विश्व में शांति सम्भव

- डॉ. अनिल आर्य, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा

30 दिसम्बर, 2014, सोनीपत, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, हरियाणा प्रान्त के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज शांतिनगर, चार मरला, सोनीपत में ''वेद वितरण समारोह'' श्री मनोहर लाल चावला जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि आर्यनेता व उपप्रधान सार्वदेशिक सभा डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आज विषम परिस्थितियों में केवल ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' की शिक्षायें ही विश्व में शांति और सद्भावना स्थापित कर सकती हैं। उन्होंने आह्वान किया कि आज आवश्यकता है कि घर-घर में 'वेदों' को पहुंचाने का दायित्व सभी आर्यजन अपने हाथों में लें। महात्मा वेदमुनि जी ने कहा कि भोगवादी संस्कृति के विकृत परिणामों से आज हर वह व्यक्ति दु:खी है जो अध्यात्म से दूर है अत: सच्ची शांति और मानव जीवन का कल्याण केवल वेदों की शिक्षाओं से ही सम्भव है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई ने बताया कि आगामी 24 से 26 जनवरी, 2015 को परिषद् के तत्वावधान में 36वां 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कमलसिनेमा पार्क, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली में किया जायेगा और सभी से बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की। श्री मनोहर लाल चावला जी ने घोषणा की कि हम वेदों को घर-घर पहुंचाने का जन अभियान चलायेंगे और आगामी 24 से 26 जनवरी के कार्यक्रम में सोनीपत से 500 आर्यजन भाग लेकर हमें सफल बनायेंगे। श्री हरिचन्द स्नेही जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि नित्य प्रतिदिन वेद के एक-एक मन्त्र का स्वाध्याय करते हुए अपने मानव जीवन को सार्थक बनावें। इस अवसर पर श्री रामकुमार सिंह आर्य, श्री हरबंसलाल अरोड़ा (प्रेस सचिव), श्री नफेसिंह (सिरसा), अर्जुनदेव जी दुरेजा, श्री राजेन्द्र जी बत्रा, सुभाष चानना, गोविन्द प्रकाश, अरूण आर्या, माधव आर्य, राजकुमार आदि ने भी अपने विचार रखे।

प्रेस सचिव - हरबंस लाल अरोड़ा

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान
गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोलाझाल, मेरठ (उ. प्र.)
अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी
विषय : वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप

वेदों के मूर्ध विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस के अवसर पर माघ कृष्ण अष्टमी मंगलवार वि.-2071 (दिनांक 13/01/2015) को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल, मेरठ (उ. प्र.) में **वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप** विषय पर अखिल भारतीय शोधसंगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

विद्वज्जनों से निवेदन है कि अग्रलिखित बिन्दुओं पर अपना वैदुष्यपूर्ण शोध-लेख walkman- chanakya -901 फॉन्ट में टंकित करवाकर pavamani1986@gmail.com पर मेल करें। सभी उत्कृष्ट लेख ISSN 2229-6328 पावमानी (त्रैमासिक शोध-पत्रिका) में प्रकाशित किये जायेंगे। सभी वेदानुरागी गोष्ठी में परिचर्चा हेतु सादर आमन्त्रित हैं।

नोट :- कृपया लेख में उद्धरणों को संदर्भ सहित पादटिप्पणी में ही उल्लिखित करें, केवल संदर्भ के लिए पादटिप्पणियों का प्रयोग न करें। आशा है विद्वज्जन अपना सारगर्भित लेख समय पर भेजकर वेदज्ञान के प्रसार में सहयोगी बनेंगे। विस्तृत सूचना एवं विषय के उपशीर्षकों के लिए संस्था से सम्पर्क करें।

- प्रो. सोमदेव शतांशु, संयोजक, 0-9837647427

पाखण्ड का भण्डा फोड़ने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि

रविवार 23 नवम्बर को आर्य समाज जयपुर (दक्षिण) में साप्ताहिक सत्संग के बाद मौन रखकर उन आर्यवीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई जिन्होंने हरियाणा में पाखण्डी स्वयंभू सन्त रामपाल का भण्डाफोड़ करने में संघर्ष किया व प्राण गंवाए। आर्यवीर सर्वश्री सोनू ने 2006, उदयवीर शास्त्री व संदीप आर्य ने 2013 में शहादत पाई।

पाखण्डी रामपाल के कुकृत्यों की भर्त्सना के साथ सर्वश्री यशपाल 'यश' (सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, प्रदेशाध्यक्ष), जसवन्त राय, योगेन्द्र सोनी, श्रीमती मधुरानी, राजेश योगी आई. डी. माथुर एवं हरिचरण सिंहल तथा उपस्थित जनों ने एक स्वर से मांग की कि हरियाणा सरकार इन तीनों आर्यवीरों को शहीद का दर्जा व राजकीय सम्मान प्रदान करें। *- ईश्वर दयाल माथुर*

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन रविवार दिनांक 16 नवम्बर, 2014 अपरान्ह 3 से 7 बजे तक कच्छी कड़वा पाटीदार समाज वाड़ी बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नामदेव आर्य धर्माचार्य आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई ने विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया।

प्रवक्ता के रूप में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया, उनके प्रवचन बहुत ही सरल एवं प्रभावशाली रहे। श्री वीरेन्द्र मिश्रा एवं योगेश आर्य ने ओजस्वी एवं सुमधुर भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। गुजरात से पधारे श्री अरविन्द राणा सम्पादक- अग्निपथ एवं उनकी सुपुत्री ने अपनी विशेष कला से सभी को प्रभावित किया।

इस सम्मेलन का विशेष आकर्षण मुम्बई आर्य वीर दल के युवा संचालक, अध्यक्ष - पतंजलि योग समिति सान्ताक्रुज, मुम्बई, महामन्त्री - आर्य पुरोहित सभा मुम्बई, अध्यक्ष - समत्वम् योग संस्था मुम्बई, धर्माचार्य - आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री जो अपनी प्रतिभा के अनुकूल योग शिविरों एवं चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से मुम्बई में एक अलग पहचान बना चुके हैं। इस प्रकार सत्य और श्रम के प्रति अगाध निष्ठावान, ऐसे व्यक्तित्व के धनी को श्री टी. एस. भाल आई. पी. एस. संस्थापक रेड स्वस्तिक सोसा, मुम्बई एवं श्री लद्धाभाई पटेल ट्रस्टी महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के करकमलों से ''वैदिक वीर'' पुरस्कार द्वारा सम्मान करना रहा, जिससे सम्पूर्ण सदन एक मिनट तक तालियों से गूंजता रहा। कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी फूलहार, शॉल, श्रीफल आदि से सम्मान किया।

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई के अध्यक्ष प्रभारंजन पाठक ने हजारों समर्थकों के सामने संस्था का उद्देश्य सभी के सामने प्रस्तुत किया। स्वामी योगानन्द जी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा महामन्त्री परेश पटेल ने सफल कार्यक्रम के लिए सभी का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज एवं वैदिक संस्थाओं के प्रवक्ता
श्री ईश्वर दयाल माथुर सम्मानित

जयपुर एवं उपनगर आर्य सामाजिक संस्थाओं की गतिविधियों एवं समारोहों के समाचार प्रसारणार्थ प्रेषित करने वाले हिन्दी साहित्यकार, पत्रकार तथा मानसरोवर आर्य समाज के उपप्रधान श्री ईश्वर दयाल माथुर का भारतीय जनता पार्टी (वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ) द्वारा समारोह पूर्वक सम्मान किया गया।

भारतीय जनता पार्टी (वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ) के प्रदेश संयोजक, पूर्व पुलिस अधीक्षक नटवर लाल शर्मा के अनुसार समाज सेवा, समरसता एवं साहित्य क्षेत्र में योगदान हेतु 78 वर्षीय श्री माथुर को राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी ने शॉल, प्रतीक चिन्ह एवं माल्यार्पण के साथ सम्मानित किया। समारोह के सह संयोजक नन्द किशोर काम्बोज ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के अध्यक्ष यशपाल यश, मानसरोवर, आर्य समाज के अर्जुनदेव कालड़ा, आर्य समाज जयपुर (दक्षिण) के डी. के. गुप्ता तथा वैशाली नगर के डॉ. मोतीलाल सहित जयपुर के आर्य जगत् ने हर्ष प्रकट किया है।

संस्कारित पुत्री का प्रतिभा दर्शन

आर्य परिवार की संस्कारित पुत्री, मानसरोवर की सुश्री भारती शर्मा ने राजस्थान न्यायिक सेवा परीक्षा (2013) में 54वां स्थानप्राप्त कर प्रतिभा प्रदर्शन किया है। सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी श्री प्रेम कुमार शर्मा तथा आर्य सत्संगी श्रीमती लता शर्मा की पुत्री सुश्री भारती वर्तमान में राजस्थान सरकार में कनिष्ठ विधि अधिकारी पद पर आसीन है। सुश्री भारती ने उद्गार प्रकट किए हैं कि अपनी योग्यता व पद का उपयोग समाज को त्वरित व सुलभ न्याय दिलाने में करेंगी। इस उपलब्धि का श्रेय माता-पिता एवं परिजनों के आशीर्वाद एवं वरिष्ठ शासकीय अधिकारियों को वे देती हैं।

- ईश्वर दयाल माथुर

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 2–3 जनवरी, 2015
प्रकाशन की तिथि : 1 जनवरी, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
1 से 7 जनवरी, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

**इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।**

—ऋ० ८/२/१८ ; अथर्व० २०/१८/३

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः।।
देवता—इन्द्रः।। छन्दः—आर्षीगायत्री।।

विनय—आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत–से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वञ्चित हो जाते हैं। अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार–यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं– इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन (Discipline) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है– बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर भूल–चूक से बिल्कुल रहित होकर– कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य–प्रमाद करने वाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं?अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार–बार दण्ड दे–देकर, उन्हें पुनः–पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार–उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ–कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार–यज्ञ के लिए सोम–रस का सेवन करना है। तनिक देखो–इन देवों के प्यारे लोगों को देखो– जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार–यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम–रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जाग्रत्, कटिबद्ध संनद्ध रहते हुए देव–तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ—देवाः=देव लोग सुन्वन्तम्=यज्ञकर्म करते हुए की इच्छन्ति=इच्छा करते हैं। न स्वप्नाय स्पृहयन्ति=निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। अतन्द्राः=स्वयं आलस्य–रहित ये देव–लोग प्रमादम्=गलती, भूल करने वाले का यन्ति=नियमन करते हैं।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 20 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।